ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 8 Issue 3 June 2022

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

अंजना गंगवार (शोधार्थी)
महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली

सन्दर्भ:

परिवार भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण घटक है, भारतीय समाज में परिवारों को बहुत महत्व दिया जाता है तथा बालक जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी परिवार का हिस्सा होता है। परिवार से जुड़े सभी रिश्तो को भारत में बहुत मान्यता दी जाती है, विभिन्न प्रकार के परिवार मिलकर ही समाज का निर्माण करते हैं। भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी अनेकता में एकता की भावना है। यहां विभिन्न प्रकार तथा वर्गों के लोग निवास करते हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार की परंपराएं प्रचलित हैं। भारतीय समाज विविधता प्रदान है, तथा यहां परिवारों के स्वरूप भी भिन्न हैं। वर्तमान में सामूहिक परिवारों का स्थान अधिकतर एकल परिवारों ने ले लिया है, जिसका सीधा असर बच्चे की सृजनात्मक चिंतन क्षमता पर भी पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

कठिन शब्द:

भारतीय संस्कृति, सृजनात्मक चिंतन क्षमता, पारिवारिक वातावरण, सांस्कृतिक विविधता, सामूहिक परिवार, एकल परिवार।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

अंजना गंगवार (शोधार्थी)
महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली

बालक जन्म के साथ ही सामाजिक नियमों के अनुसार एक परिवार का हिस्सा बन जाता है। परिवार बालक के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ज्ञानार्जन की प्रक्रिया बालक के जन्म के साथ ही आरंभ हो जाती है। बालक अपनी ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से जगत में विद्यमान तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना आरंभ करने लगता है। आंखों के माध्यम से सांसारिक वस्तुओं को देखना (चक्षेन्द्रिय), कानों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की ध्वनियों को सुनना (श्रवणेन्द्रिय), नासिका के माध्यम से गंध को ग्रहण करना (घ्राणेन्द्रिय), जीह्वा के माध्यम से रसास्वादन करना (स्वादेन्द्रिय), तथा सांसारिक वस्तुओं को स्पर्श के माध्यम से पहचान (त्वकेन्द्रिय), के द्वारा बालक बाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान की यह प्रक्रिया व्यक्ति के विकास के साथ अनवरत चलती रहती है, देखकर, सुनकर तथा अनुकरण के माध्यम से बालक जगत में ज्ञान अर्जित करता है। यह ज्ञान की प्रारंभिक अवस्था है, जिसके साथ ही जैसे–जैसे बालक परिवार समाज और वातावरण के संपर्क में आता है, तदनुसार उसके ज्ञान में वृद्धि होती जाती है, तथा यह ज्ञान अगली पीढ़ी को स्वतः ही हस्तांतरित होता जाता है।

बालक के सर्वागीण विकास में बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता का विशेष स्थान है, तथा इसे विकसित करने में परिवार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालक के प्रथम शिक्षक उसके माता–पिता ही होते हैं। माता–पिता बालक को जैसी शिक्षा देते हैं, उसके अनुसार ही वह पारिवारिक जीवन में स्वयं को अनुकूल बनाता है। उसी के अनुरूप उसके व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

शैशावस्था से ही बालक अपने माता–पिता के संपर्क में अधिक रहता है। एकल परिवारों में माता–पिता के अतिरिक्त बालक को और कोई नहीं देखता। जबकि संयुक्त परिवारों में माता–पिता के अतिरिक्त दादा–दादी, ताऊ–ताई, चाचा–चाची, बुआ आदि के बीच रहकर बालक का सर्वागीण विकास होता है। ऐसे में यदि परिवार का वातावरण सकारात्मक है, तो बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। और यदि परिवार का वातावरण नकारात्मक है, तो बालक का विकास कुंद हो जाता है, तथा उसकी चिंतन क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिससे वह समस्याओं को सुलझाने के योग्य बनने के स्थान पर कालांतर में स्वयं ही समस्याएं उत्पन्न करने वाला बन जाता है। अतः यह आवश्यक है, कि बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता को विकसित करने के साथ ही उसके सर्वागीण विकास के लिए परिवार (चाहे वह एकल हो या संयुक्त) का वातावरण सकारात्मक रखा जाए।

यद्यपि प्रत्येक परिवार में समस्याएं एवं कभी–कभी एक दूसरे के प्रति कटुता उत्पन्न हो जाती है। तथापि इसका अनावरण बालक के समक्ष कदापि नहीं करना चाहिए, और न ही किसी भी रूप में उसे यह अहसास कराना चाहिए कि आपसी कटुता में उसके (बालक के) प्रति किसी के व्यवहार में कोई परिवर्तन आ रहा है।

बढ़ती हुई अवस्था में बालक की सोच, सामर्थ्य, प्रवृत्ति, तथा सृजनात्मकता को पल्लवित होने के लिए सकारात्मकता एवं प्रोत्साहन की बहुत ही आवश्यकता होती है। बालक स्वभाव से ही सृजनात्मक कार्यों की ओर उन्मुख होता है। उसमें यह प्रवृत्ति किशोरावस्था में पूर्ण रुप से पल्लवित होती है, जिसे स्पष्ट देखा जा सकता है।

बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता के आधार पर ही उसे उसकी रूचि के अनुसार डॉक्टर, इंजीनियर, व शिल्पी आदि बनाया जा सकता है। अतः यह आवश्यक है, कि बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता के विकास के लिए परिवार के वयस्कों एवं वृद्ध अभिभावकों की देखरेख में उनके रुचिकर कार्यों को करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए।

छोटी आयु के बालक कागज काटना, मिट्टी के खिलौने बनाना, क्यारियां बनाना, सजावट करना, विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक क्रिड़ाओं को संपादित करना (खेल–खेल में डॉक्टर टीचर आदि बनना), कहानियां कविताएं लिखना आदि रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से बालक अपनी सृजनात्मकता का विकास करते हैं। इस प्रकार के क्रियाशील वातावरण में बालक को शिक्षा भार स्वरूप नहीं लगती और इस प्रकार के सकारात्मक परिवारिक वातावरण में उसकी प्रकृति और रुचि के अनुरूप उसकी क्षमताओं का विकास होता है, तथा बालक अपने मौलिक ज्ञान का परिमार्जन कर, न केवल अपने जीवन को बल्कि देश तथा समाज को भी सुखमय बना सकता है।

बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता को विकसित करने में पारिवारिक संस्कार भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। यर्थाथ में हर परिवार अपने आप में एक

शिक्षा का केंद्र स्वरूप है, जहां बालक को संस्कारों तथा सकारात्मकता की सीख मिलती है। जिससे बालक की रचनात्मकता का विकास होता है।

जिन परिवारों का वातावरण नकारात्मकता पूर्ण होता है, अर्थात जिन परिवारों में कलह, अपशब्दों का प्रयोग आदि व्याप्त है। उन परिवारों की चिंतन क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिसके परिणामस्वरूप बालक का विकास रुक जाता है, तथा उसकी चिंतन क्षमता अवरूद्ध हो जाती है। इसके विपरीत जिन परिवारों में बड़ों का आदर, मेलजोल से रहना, सौम्य भाषा का प्रयोग, सकारात्मकता आदि शुभता युक्त वातावरण व्याप्त होता है, तथा इसके साथ ही साथ बालक के छोटे से छोटे रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहित किया जाता है, वहां लोगों की रचनात्मक चिंतन क्षमता का विकास भी तीव्र गति से होता है।

अतः बालको की सृजनात्मक चिंतन क्षमता के विकास में परिवार तथा परिवार का वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उपरोक्त शोध पत्र के अध्ययन के पश्चात् हम देखते हैं, कि बालक की सृजनात्मक क्षमता के विकास में परिवार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

सकारात्मक पारिवारिक वातावरण में बालक की सृजनात्मक चिंतन क्षमता का यथेष्ट विकास होता है। परिणामस्वरूप बालक अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर समाज के लिए उपयोगी बनने के साथ ही अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान भी प्राप्त करने में सक्षम बन सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. व्यास हरिश्चन्द्र (2009), नैतिक शिक्षा, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
2. पाण्डेय रामशकल एवं मिश्र करूणाशंकर (2004), मूल्य शिक्षण आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
3. पतंग, मायाराम (2008) व्यवहार में निखार, दिल्ली, साहित्य प्रकाशन, चावड़ी बाजार।
4. पाठक पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. शर्मा आर.ए., शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व, लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. गुप्ता, एम.पी. (1998), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
7. सिंघल, महेश चन्द्र (1971), भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
8. लाल, रमन बिहारी (2009), भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन।
9. मिश्र सन्त कुमार (2012), भारत में शिक्षा व्यवस्था, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।

10. भटनागर, ए. बी. (2010), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, मेरठ, आर. लाल. बुक डिपो।
11. शरण, बी. लाल, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, विनीत प्रकाशन, मेरठ।